(128)
106

वायु प्रदूषण का सरल उपचार

तुलसी आरोपण

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वायु प्रदूषण का सरल उपचार-तुलसी आरोपण

इन दिनों बढ़ती हुई जनसंख्या एवं यान्त्रिक गतिविधियों से वायु-प्रदूषण का अनुपात असाधारण रूप से बढ़ा है। कारखानों तथा द्रुतगामी वाहनों में जो कोयला, तेल जलता है, उसका विषैला धुँआ इस वायुमण्डल में निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह वायु प्राणिमात्र के लिए अन्न, जल से भी अधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार जल या पानी के सहारे जीवित रहते हैं उसी तरह हम सब हवा के समुद्र से प्राण सम्पदा प्राप्त करते हैं। जल विषाक्त होने पर मछलियों का दम घुट जाता है। वायु में घुलता और बढ़ता प्रदूषण पशु-पक्षियों समेत मनुष्यों को भी घुटन का अभिशाप सहन करने के लिए विवश करेगा।

वायु प्रदूषण के साथ विषैली साँस से आरोग्य नष्ट होने, रुग्णता का दौर उभरने, महामारियाँ फैलने के अतिरिक्त एक संकट तापमान बढ़ने का भी है। संतुलित तापमान से मौसम का नियन्त्रित क्रम यथावत् बना रहता है किन्तु यदि गर्मी की मात्रा बढ़े तो उसकी भयानक प्रतिक्रिया मौसम गड़-बड़ाने के रूप से प्रकट होती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, के कारण दुर्भिक्ष पड़ते हैं। जमी बर्फ पिघलती है और समुद्र की सतह ऊँची उठने लगती है फलतः अग्नि-युग, हिम-युग जैसे प्रकृति प्रकोप उभरते हैं, जिनके कारण भूमि-परिभ्रमण-प्रक्रिया लड़खड़ाती है। भूकम्प आते हैं और थल की जगह जल और जल की जगह थल आ धमकने जैसे व्यतिक्रम खड़े होते हैं। भूतकाल में जब भी ऐसे प्रकृति विपर्यय उभरे हैं प्राणियों का जीवन और वनस्पतियों का अस्तित्व संकट में पड़ा है। खण्ड प्रलय जैसी स्थिति बनी है। इन दिनों बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण उन भूतकालीन विभीषि-काओं का नया दौर आने की आशंका है।

युद्धोन्माद में प्रयुक्त होने वाली बारूद विषाक्त सामान्य धुएँ की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुलना में हजारों गुनी अधिक भयंकर होती हैं फिर पिछले दिनों अणु विस्फोटों का नया सिलसिला चला है। जापान में फेंके गये दो छोटे-छोटे एटम बमों ने उन दिनों तत्काल कितनी हानि पहुँचाई तथा बाद में उस विकिरण से प्रभावित कितने व्यक्ति अपंग, असमर्थ हो गये, विकलांग बच्चे उत्पन्न हुए इसका लेखा-जोखा ध्यानपूर्वक पढ़ने से कलेजा दहलने लगता है। जापान पर गिराये गये बमों की तुलना में हजारों गुना विकिरण उन परीक्षण-विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुआ है जो जल-थल और आकाश में अनेक देशों द्वारा निरन्तर किये जाते रहे हैं।

विज्ञजनों ने पर्यवेक्षण करके बताया है कि अब तक हो चुके अणु-विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुई विकृतियाँ ही ऐसी हैं जो सैकड़ों वर्षों तक कष्टकारक रहेंगी और पीढ़ियों तक त्रास देंगी। यदि यह सिलसिला आगे भी जारी रहा तो उसका प्रभाव एक प्रकार से महा-प्रलय जैसा सर्वनाशी होगा। वायुमण्डल की विकृतियाँ धरती और जल पर उतरती हैं और उनमें भी ऐसे तत्व फैलते हैं जो अन्न-जल को भी साँस की तरह विषाक्त करके जीवन-संकट उत्पन्न करें।

बिगाड़ने वाले जब इतनी निर्भीकतापूर्वक विनाश पर उतारू हैं तो देवत्व के पक्ष धर लोगों के लिए यह उचित नहीं कि हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें। यदि बिगाड़ने वाले हाथोंको रोक सकने की सामर्थ्य न होतो कम से कम सफाई की व्यवस्था तो करनी ही चाहिए। यह सरलतम और सफलतम उपचार है। इतना तो नगरपालिकाओं के मेहतर तक करते रहते हैं। हम उतना भी कुछ न करें और दूसरों के साथ जुड़े हुए अपने भाग्य-भविष्यको—पीढ़ियों के निर्वाह को अन्धकारमय बनाने में रोकथाम न कर सकें। यों होना यह भी चाहिए कि महाविनाश पर उतारू लोगों पर जनमत का दबाव डालें और इस सृष्टि का सर्वनाश करने वाले आततायियों और आतंकवादियों को मनमानी न करने दें। जाग्रत लोकमत दोनों ही काम कर सकता है। रोक-थाम तत्काल बन पड़ती न देखें तो भी परिशोधन प्रयोगों को हाथ में लेने का उत्साह तो प्रकट करें ही।

Free Read/Download & Order 3000 e-books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस संदर्भ में सरलतम उपाय उपचार दो हैं एक अग्निहोत्र प्रक्रिया दूसरा हरितमा संवर्धन। अग्निहोत्र के सम्बन्ध में मत-भेद और विवाद भी हो सकते हैं किन्तु हरितमा-संवर्धन में तो आस्तिक नास्तिक का, धर्म सम्प्रदाय का, विज्ञान बुद्धिवाद का भी विरोध-अवरोध नहीं है, उसे तो सर्व सम्मत उपचार की तरह सर्वत्र सरलतापूर्वक अपनाया जा सकता है।

वृक्ष, वनस्पतियोंका यह गुण सर्वविदित है कि वे वायु में से अनुपयुक्त तत्वों को सोखते और प्राण वायु को निसृत करते रहते हैं। आरोग्य सम्पादन के उपायों में एक यह भी है कि हरे-भरे क्षेत्र उद्यान में रहकर प्राणप्रद वायु सेवन की व्यवस्था बनाई जाय। प्रगतिशील देशों में शोभा और स्वास्थ्य का समन्वित लाभ लेने के लिए घरों के साथ हरितमा भी जोड़कर रखी जाती है। कई तो उस बागबानी को घरेलू विनोद-मन रंजन की तरह परिवार के सदस्यों द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। माली का उपयोग तो मात्र मार्ग दर्शन और सहयोग भर के लिए लेते हैं। यह एक सृजनात्मक पद्धति है। शिशु-पालन, पशु पालन की तरह हरितमा संवर्धन के माध्यम से भी निर्माण और संवर्धन की सत्प्रवृत्ति उगती, बढ़ती और परिष्कृत होती है। स्वभाव-अभ्यास में इस प्रकार का समावेश होना बड़ी बात है। देखने में यह छोटी बात दिखती हुए भी वस्तुतः बड़ी बात है। मनुष्यों में जो महामानव बने हैं उनमें सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ ही विशेष रूप से विकसित हुई हैं। हरितमा संवर्धन के प्रचार का यह अतिमहत्वपूर्व दूरगामी लाभ है। वनस्पतियों के सान्निध्य में प्राणवायु की प्रचुर मात्रा में उपलब्ध—देखने में भले ही सामान्य हो वस्तुतः वह है—असामान्य।

चर्चा इन दिनों वायुमण्डल में बढ़ती विषाक्तता और उस कारण प्राणियों तथा वनस्पतियों के लिए उत्पन्न संकट की हो रही है। उसके लिए हरितमा संवर्धन द्वारा रोकथाम करने के उपाय उपचार पर विचार किया जा रहा था। इस सम्बन्ध में मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि वृक्षा-रोपण एवं वनस्पति सम्वर्धन को उत्साह भरे आन्दोलन का रूप दिया जाय और उसमें जन जन को किसी न किसी प्रकार सम्मिलित किया जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ ईन्धन और इमारती कामों के लिए लकड़ी की आवश्यकता बढ़ रही है। पेड़ कट रहे हैं पर नये लगते नहीं। ऐसी दशा में मौसम का संतुलन बिगड़ता है। अनावृष्टि से दुर्भिक्ष का माहौल बनता है। भूमिक्षरण और रेगिस्तान बढ़ने का संकट खड़ा होता है।

जिनके पास अपनी जमीन है वे उसका एक भाग वृक्ष उगाने, पुष्प खिलाने और शाक उत्पन्न करने के लिए सुरक्षित रखें। मात्र अन्न और नकदी देने वाली फसलें ही पर्याप्त नहीं होंगी। जिनके पास अपनी जमीन न हो वे सरकारी या दूसरों की जमीन में मालिकों का स्वामित्व स्वीकार करते हुए उन्हीं के लिए अपने परिश्रम से पेड़ लगायें, सींचें। पूर्वजों की तथा अपनी स्मृति में किये जाने वाले पुण्य परमार्थ में वृक्ष लगाना या पैसा देकर दूसरों से लगवाने का कार्य बहुत ही श्रेष्ठ और सत्परिणाम उत्पन्न करने वाला है।

घरों में शाक वाटिका लगाने का आन्दोलन इसी अभियान का एक अङ्ग है। वनस्पति से भी छोटे रूप में वृक्षों जैसे लाभ मिलते हैं। जिनके पास भूमि नहीं है वो भी आँगन बाड़ी, छप्पर-बाड़ी, छत-बाड़ी के रूप में शाक उगा सकते हैं। साथ ही उससे मुफ्त में ताजे शाक मिलने जैसे आर्थिक लाभ उठाते रह सकते हैं। इन दिनों हरे, पौष्टिक आहार के न मिलने से कुपोषण जन्य अनेकानेक रोग बढ़ते जा रहे हैं। इनका निराकरण घी-मलाई से—टानिकों से नहीं वरन् शाक, फल, अंकुरित अन्न जैसे जीवित आहार से ही सम्भव हो सकता है। घरेलू शाक वाटिका के माध्यम से गरीब लोग भी यह सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। बड़े परिवारों के लिए छोटे घर में भी हरी चटनी की दैनिक व्यवस्था बनाये रहने के लिए—पोदीन, धनिया, अदरक, मिर्च, पालक, अनार आदि लगाने से काम चल सकता है। खिलते हुए पुष्प-हँसते हुए बालकों की तरह होते हैं। उनकी छटा तथा महक उदास, निराशों में भी उत्साह उभारती है। सज्जा-पूजा में उनका उपयोग असंदिग्ध ही है।

तुलसी आरोपण को हरितमा संवर्धनके प्रयासोंका मुकुटमणि कहा जा सकता है। तुलसी में वायु-प्रदूषण का परिशोधन करने की अद्भुत क्षमता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके सम्पर्क से बहने वाली हवा में आरोग्यवर्धक अनेकों विशेषतायें भरी रहती हैं। यहाँ तक कि मक्खी, मच्छर, खटमल, पिस्सू ही नहीं साँप, बिच्छू तक को दूर करती है। औषधियोंमें तुलसी को अनुपम एवं मूर्धन्य माना गया है। इस अकेली में प्रायः सभी छोटे-बड़े रोगों का उपचार करने की क्षमता है तुलसी, काली मिर्च गंगाजल के योग से गायत्री मन्त्र जपते हुए छोटीगोलियाँ बनाकर रख लेने और उन्हें अनुपान भेद विभिन्न रोगों में घरेलू चिकित्सा की तरह काम में लाया जा सकता है।

वृक्ष वनस्पतियों के उगाने, पोषने, बढ़ाने की कला को अधिकाधिक विकसित किया जाना चाहिए। इसके द्वारा सम्बद्ध लोगों में सृजनात्मक कुशलता बढ़ती है। कलाकारिता, सौन्दर्य, बुद्धि सुरुचि निखरती है। शिशु-पालन जैसा आनन्द आता है। पौधों की मैत्री से हाथोंहाथ सुगन्धित सुरभित प्राण-वायु के रूप में जीवनी शक्ति का उपहार मिलता है। घरों में उगाई शाक भाजी और बाजार से खरीदी हुई में उतना ही अन्तर है जितना घर के दूध एवं आहार में। बाजार से उन्हें उतनी शुद्ध एवं जीवन्त स्थिति में खरीदा ही नहीं जा सकता। पैसे की बचत, शारीरिक-मानसिक व्यायाम, पोषण आहार जैसे सामान्य एवं महत्वपूर्ण लाभों की भी एक शृंखला इस प्रक्रिया के साथ जुड़ती है। तुलसी आरोपण में औषधियों के लिए प्रयुक्त होने वाली जड़ी बूटियों को उगाने बढ़ाने का भी एक अभिनव शुभारम्भ संकेत हैं।

गान्धीजी ने नमक सत्याग्रह जैसे छोटे से कार्यक्रम को लेकर सत्याग्रह आन्दोलन का श्री गणेश किया था। कालान्तर में वही चिनगारी बढ़कर दावानल के रूप में विकसित हुई और 'करो या मरो' का विप्लव खड़ा करते हुए अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने में समर्थ हुई।

हरितमा सवर्धन की योजना उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि मनुष्यों के निर्वाह की घरेलू शाक वाटिका। इसे तुलसी आरोपण के शुभारम्भ के रूप में इसलिए चलाया गया है कि उसे सुगम उपचार के रूप में सर्वसाधारण द्वारा अपनाया जा सके। वस्तुतः यह हरितमा का महत्व समझाने और वृक्ष, वनस्पतियों, अन्न शाकों, जड़ी बूटियों के उत्पादन का ऐसा आन्दोलन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है जिसे अधिकाधिक महत्वपूर्ण माना और उसे जीवनचर्या में प्रमुख स्थान मिलने की स्थिति तक पहुँचाना चाहिए। धरती को हरी भरी रहना चाहिये। और उस प्रकृति अनुदान का भरपूर लाभ समूची मनुष्य जाति को--प्राणि समुदाय को मिलना चाहिये।

इन दिनों बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए कारगर उपचार के इस संदर्भ में वनस्पति सम्वर्धन का उपचार यदि काम में लाना हो तो इसके लिए तुलसी आरोपण को प्रमुखता देनी होगी। उसके पौधे हर आँगन में लगाये जाने चाहिए और इस आधार पर आस्तिकता धर्मधारणा के सम्वर्धन का भी दुहरा लाभ उठाया जाना चाहिए। धातु या पत्थर से ही प्रतिमा नहीं बनती वरन् अक्षय वट, बोधिवृक्ष, देव अश्वत्थ की तरह पेड़ों और,पौधों को भी भगवान की प्रतिमा मानकर उनको श्रद्धा सम्वर्धन का निमित्तकारण बनाया जा सकता है।

तुलसी का विरवा आँगन में एक सुसज्जित थावले के रूप में लगाया जाय और उसे खुले आकाश में सूर्य भगवानकी, खुले पवन की, वरुणकी बादल की छत्र छाया में पलने वाला देवता माना जाय। वनस्पति मन्दिर सच्चे अर्थों में एक पुनीत देवता हैं। धातु या पाषाण की प्रतिमा की तुलना में तुलसी का महत्व किसी प्रकार कम नहीं है। इस स्थापना का अर्थ है घर में भगवान के मन्दिर का निर्माण कर लेना। इसमें कोई पूजा भी नहीं करनी पड़ती है। मात्र श्रमदान से ही सारा काम चल जाता है। थांवले को जल्दी-जल्दी पोतते-रंगते रहा जाय तो उसका सुहावना रूपश्रद्धा सम्वर्धन की भूमिका भी सम्पन्न करता रहेगा।

प्रातः सायं जब भी अवकाश हो सूर्यार्घ, अगरबत्ती, मानसिक गायत्री जप, सविता का ध्यान, नमन, वन्दन, परिक्रमा जैसे उपचार से इ। वनस्पति मन्दिर की पूजा आरती सरलतापूर्वक की जा सकती है। घर का कोई भी सदस्य इसे करता रह सकता है। इस पूजा उपचार में घर के सभी श्रद्धालु लोग किसी न किसी रूप में भागीदार बन सकते हैं। नमन, वन्दन तो निकलते-बरतते भी हो सकता है। इस आधार पर घर-परिवार में आस्तिकता,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धार्मिकता का वातावरण बनता है। इस छोटी व्यवस्था में घर परिवार में पनपने वाली श्रद्धा अन्ततः दूरगामी सत्परिणाम उत्पन्न करती है।

इन दिनों वायु प्रदूषण की तरह ही चेतनात्मक वातावरण भी कम विषाक्त नहीं हो रहा है। वातावरण के परिशोधन में जिस धर्म श्रद्धा का पुनर्जीवन आवश्यक है, उसकी पूर्ति तुलसी देवालय के माध्यम बन पड़ती है। इस प्रकार तुलसी आरोपण में न केवल वायु मण्डल के संशोधन की वरन आस्था संकट से घिरे हुए वातावरण में श्रद्धा संवर्धन की आवश्यकता भी बहुत हद तक पूरी होती है। एक प्रकार से दुहरा लाभ प्रदान करने वाले हरितमा संवर्धन अभियान का शुभारम्भ तुलसी आरोपण के साथ करने की बात सोचनी चाहिए। इसके लिए बीज इकट्ठे करने, पौध उगाने, लगाने का प्रचार करने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए। उत्साह उभारा जाय और तत्काल सहायता देने के लिए प्रयत्न किया जा सके तो प्रज्ञा परिवार संकट की इस महती आवश्यकता को पूरी करने में भली प्रकार सफल हो सकता है।

तुलसी को प्रतीक मानकर हरितमा संवर्धन के कार्य का श्रीगणेश एक व्यापक और विस्तृत प्रक्रिया है। वनस्पति हमारे लिए जीवन प्राण है वह धरती से आहार, बादलों से जल, आकाश से प्राण वायु खींचकर जीवन सम्पदा के रूप में प्रदान करती है। इसलिए उसे पशुपालन, गोपालन की तरह ही महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। तुलसी के साथ दिव्यऔषधि की विशेषतायें तथा अध्यात्म परायण श्रद्धा भावनायें भी जुड़ती हैं और इसके लाभ तीन से बढ़कर पाँच हो जाते हैं। श्रद्धा आरोपण के लिए देव प्रतिमाओं की पूजा परम्परा प्रचलित है। प्रतिमाओं को धातु पाषाण की अपेक्षा वनस्पति के तुलसी के रूप में पूजा जाना उपयोगिता के साथ भी जुड़ता है। उसमें कृतज्ञता की एक नई भाव गरिमा का समावेश होने से लाभ का अनुपात दुहरा बनता है।

क्र० १०६/प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org